divinepramilabhagwan.com

Fundamental Points of Divine Dada's Satsang

Fundamental Points
of
Divine Dada's Satsang

Fundamental Points of Divine Dada's Satsang

सतगुरू की अमृतवाणी

1. इच्छा मात्रम् अविद्या।
2. मौत है ही नही।
3. सत्कर्म सोने की जंजीर, बदकर्म लोहे की जंजीर।
4. श्री रामचँद्र लोकारीत, श्रीकृष्ण लोकसंग्रह।
5. भगवान जहाँ तहाँ है, हर चीज़ भगवान है।
6. समदृष्टि, पर समवर्तन नही।
7. उत्तरायण-दक्षिणायन।
8. ज्ञानयज्ञ सर्वश्रेष्ठ है।
9. ख्याल करना तुम्हारा धर्म नहीं।
10. अशोक रहना तुम्हारा धर्म है।
11. श्रीकृष्ण ब्रह्मचारी, दुर्वासा ऋषि निराहारी।
12. आत्मा साधय वस्तु नही है।
13. दया धर्म का मूल है, पर नर्क मूल अभिमान।
14. पूर्ण गुरु का सुन उपदेश। पारब्रह्म निकट कर देख।
15. पूर्ण गुरु की निशानियां हैं – निरइच्छा, निरअंहकार।
16. योगक्षेम का भार मुझ पर है।
17. अनन्य भक्ति, अव्यभिचारी, अभेद भक्ति।
18. देह अध्यास छोड़ने के सिवाय आत्मा का निश्चय नही होगा।
19. सुमरण का मतलब आप विसर्जन (सु-मरण)।
20. परधर्म मे नहीं जाओ (इन्द्रियों का धर्म)।
21. जो कुछ सीखा है सब भुलाओ, तो भगवान मिलेगा।

22. सब को एक सा प्यार करो।
23. प्यार कर्म नहीं, पर स्थिति है।
24. अपनी भूल निकालना ही बहादुरी है, अपने को सुधारें।
25. विराट स्वरूप (सर्व में पेखे भगवान)।
26. श्रद्धावान लभते ज्ञानम्, अश्रद्धावान नाशजान।
27. सब कर्म छोडकर मैं की शरण लो, यानी आत्मा की।
28. प्रार्थनाऐं और शास्त्र बेकार हैं (ईश्वर की प्राप्ति में)।
29. पुस्तक डाल पानी में, गुरूमुख से ज्ञान मिलेगा।
30. शुभ-अशुभ का त्यागी मुझे प्रिय है।
31. ज्ञानयज्ञ सर्वश्रेष्ठ है, ज्ञान का दान श्रेष्ठ है।
32. मन्दा किसनू आखीये, जो है ही भगवान।
33. मुस्कुराना और शुक्राना सुबह का व्यायाम है।
34. ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर, ब्रह्मज्ञानी को खोजे महेश्वर।
35. सहज मिला सो दूध बराबर।
36. वैराग्य और त्याग की ताकत पर है मन की मौजों की खुशी।
37. ज्ञानी ट्रस्टी, बैंक कैशियर, हेड मास्टर की तरह है।
38. इंसाफ ही भगवान की मेहर नज़र है।
39. भगवान को पुकारना अज्ञान है।
40. दुख ही दुख है सुख लेने में, सच्चा सुख है सुख देने में।
41. भोगी हृदय उदास, योगी हृदय निवास।
42. बार्हमुखी सदा दुखी, अर्न्तमुखी सदा सुखी।
43. आप अकेला सब करे, घट में लहर उठाय।
44. ब्रह्मज्ञान का साधन है पूर्ण गुरू।

45. पूरा सतगुरु भेटीया, तो पूरी हुई युक्त।
46. मन को आत्मा की राह दिखा दे, वरना मन नही मानेगा।
47. मेरा कर्म दिव्य, जन्म दिव्य, मैं अजन्मा, अकर्ता हूँ।
48. समर्थ खुशी से त्याग करता है। असमर्थ से भोग छूट जाते हैं।
49. भोग हम नही भोगते, भोग हमे भोग जाते हैं।
50. फूल तोड़ने में देरी है, पर ज्ञान लगने में इतनी भी देर नहीं।
51. न आने से अच्छा है, देर से आना।
52. गुरु का गुस्सा, मोहनथाल से मीठा।
53. गुरु झिड़के तो मीठा लागे, गुरु बक्शे तो गुरु वड़ियायी।
54. भगवान का मिलना आसान है, पर सतगुरु का मिलना मुश्किल है।
55. सतगुरु को पाने के लिए शीश देना पड़ता है।
56. ज्ञान अग्नि, दग्धः कर्म।
57. ज्ञान अग्नि, ज्ञान सुरमा, ज्ञान नाव, ज्ञान रोशनी।
58. दिल का धड़कना ही पाप है।
59. शादी मज़ा नही, पर सज़ा है।
60. परमात्मा के प्यार में ऊपर चढ़ते हैं, दुनियाँ के प्यार में नीचे गिरते हैं।
61. मौन है सोना, बोलना है चाँदी।
62. कोई भी कर्म खाते में नहीं आये।
63. पराधीन सपनेहूं सुख नाही, मरे हुए को कौन मारेगा।
64. प्रेम केवल देना है, प्रेम में मांग नही होती।
65. कामिनी, कीर्ति, कंचन से बचो।
66. कुछ भी अपना नहीं समझो, सब अमानत है भगवान की।
67. समय धन है बल्कि धन से भी कीमती है।

68. भगवान तेरी मर्ज़ी चले, न कि मेरी मर्ज़ी।
69. भगवान ने तुम्हारी प्रारब्ध पहले से ही बना दी है।
70. मरने से पहले मरो, काल को सिर देने से तो अच्छा है गुरु को सिर दे दो।
71. गुरु के शब्द पर मर मिट जाओ, गुरु वाक्य सत्यम।
72. जो करता है, सो मरता है, सो भरता है।
73. माया में गुलामी और सलामी है।
74. दौलत यानी दो लात, आये तो अंधा करे, जाये तो कमर तोड़े।
75. माया और चतुराई, मुक्ति में रूकावट हैं।
76. दान नहीं करें, पर उदारचित्त बनें।
77. भगवान अपने प्यारों को देता है – बीमारी, गरीबी, निन्दा।
78. प्रभु का सुमिरण, साध के संग।
79. अनुभवी पुरूष का मौन लेक्चरर के लेक्चर से अधिक प्रभावशाली होता है।
80. मान न मान, तू है भगवान।
81. बुद्धि से आत्मा न जानेंगे, आत्मा से आत्मा जानेंगे।
82. पिता का जन्म क्या जाने पूत।
83. सत्य और सरलता से ज्ञान प्राप्त होता है।
84. जंजीर के छः कड़े हैं – इच्छा, मोह, संकल्प-विकल्प, दैव्त, द्वेष, अहंकार।
85. सत्य-असत्य को जानने वाला, मैं आत्मा हूँ।
86. कर्म, भक्ति और उपासना का फल दूसरे जन्म में मिलेगा, पर ज्ञान का फल प्रत्यक्ष फल है – मुक्ति और आनन्द।
87. गुरु और ईश्वर की कृपा हुई पड़ी है पहले। अपनी ही कृपा करनी है।
88. खाने-पीने और कपड़ों का आत्मा पर कोई असर नही होता। खाना-पीना पवित्र है।
89. दैव्त का धुंआ नही केवल अदैव्त की आग। जलाओ उसमें मैं को, तो बचे ना उसकी राख।

90. कर्तापन के काले नाग ने सबको डस लिया है।

91. कबीर ऐसा कठिन व्रत लियो जो ले सके न कोय। घड़ी एक बिसरू राम को, तो ब्रह्महत्या मोहे होय।

92. होमैं दीरघ रोग है, दारू भी उस मांही।

93. आत्मा – जागृत, स्वप्न एवं सुषुप्त, तीनों अवस्थाओं से ऊपर है।

94. जगत से गूंगे, अन्धे, बहरे हो जाओ।

95. अतिइन्द्रिय आनन्द में रहता है ज्ञानी।

96. ब्रह्माकार वृति।

97. गुण, अवगुण, आत्मा में नहीं हैं। आत्मा गुणातीत है।

98. भोगने से चिन्तन खराब है। चिन्तन जायेगा ज्ञान से।

99. आम मे कीड़ा देखने से कोई आम नही खाऐगा। ज्ञान के बाद जगत मिथ्या लगेगा।

100. नानक नाम जपे इक बार।

101. थोड़ा (अधूरा) ज्ञान ज़हर है।

102. बछ्ड़ा होकर ज्ञान लो, बालक ही मालिक है।

103. भुलाओ और माफी देओ।

104. मनुष्य प्लान बनाता है, भगवान बिगाड़ता है।

105. आप सत्, किये सब सत्।

106. हर कर्म की सज़ा है, माफी नहीं।

107. जब तक तुम सबको अपना नही समझोगे, तब तक सबको जान नही सकते।

108. सारी दुनिया भगवान से भरी पड़ी है।

109. निराकार साकार रूप धरकर आया है जग में, एक से अनेक भया।

110. मुसीबतें आ नहीं सकेंगी, जब तक तुम उन्हें बुलाओगे नहीं।

111. खोटे कर्म या ख्याल करोगे तो तकलीफें अवश्य आयेंगी।

112. शरीर घोड़ा, मैं घुड़सवार हूँ। शरीर मोटर, मैं ड्राइवर हूँ।

113. चाहे कुछ करो या न करो, पर भगवान से राज़ी रहो।

114. हजार बन्दगी से अच्छा है, रज़ा मे राज़ी रहना।

115. सो साहिब चिन्ता करे, जिस उपाया जग।

116. सत्संग की एक घड़ी, हज़ार साल की तपस्या से अधिक है।

117. पुरुषार्थ से प्रारब्ध को जीता जा सकता है।

118. गुरु के पास जाओ तो खाली होकर जाओ।

119. साफ दिल बनो, पर होशियार नहीं।

120. सरल और भोले हो जाओ।

121. भोले भाव मिले रघुराई।

122. चतुर्भुज को चतुराई से नहीं पा सकते।

123. चाहिये को छोड़ दो, तो सारा जग तुम्हें जपेगा।

124. ख्यालों से खाली, जन्म रहित, मरण रहित, दैव्त रहित, भेद रहित।

125. देश को नहीं, मानवता को प्यार करो।

126. तुम बिन कौड़ी बादशाह है।

127. शानदार दान वह है जो माँगने वाले को फिर न माँगना पड़े।

128. सतोगुणी ज्ञान – सर्व में पेखे भगवान।

129. रजोगुणी ज्ञान – जुदा जुदा, कम ज्यादा भगवान देखना।

130. तमोगुणी ज्ञान – किसी एक व्यकित विशेष में भगवान देखना।

131. क्रोधी को नहीं, पर क्रोध को धिक्कारो।

132. धनवान का धन समुद्र के खारे पानी के समान है, जिससे प्यास नही बुझेगी।

133. सतगुरु सिख की आत्मा, सिख सतगुरु की देह। लखना चाहे अलख को, उसी में लख ले।

134. ऐसा तो होता ही है। सब गुज़र जाता है। कोई हालत ठहरती नहीं।

135. कर्म अनेक हैं, जैसे – प्रारब्ध कर्म, बदकर्म, सतकर्म, क्रियमान कर्म, संचित कर्म।

136. ज्ञानी महाबली, महाभोला, महात्यागी है।

137. शरीर की कीमत करो, कितने करोड़ रूपये का है।

138. जैसी प्रीत हराम में, वैसी हरि में होय।

139. माया काया बादल छाया, सुख मांगे दुख आगे आया।

140. मृगतृष्णा का जल समझने पर, पानी भरने नहीं जायेगा।

141. माया को सच समझने से ही माया की इच्छा होगी।

142. जगत – सपना, नाटक, फुरना, ख्याल, कहानी है।

143. ज्ञानी स्वेच्छा से नही, पर इच्छा से चलता है।

144. तेरा की ?

145. त्यागी, वैरागी सबको माया ने मस्त कर दिया है। उस पर विरला कोई बड़भागी गुरमुख बच पाता है। कुछ भी याद नहीं रहता जिसने जाग कर अपना आप देखा है, पहचाना है।

146. नींद मे सोये बच्चे की तरह ज्ञानी का कर्म है।

147. Gyan is caught, not taught.